बिहार सरकार

कृषि विभाग

मछली पालन

मछली पालन एक तरह की जलीय खेती है, जो मुख्यतः तालाब में की जाती है। इस जलीय खेती में तालाब खेत है, मछली का जीरा बीज है एवं मछली फसल है। जिस तरह खेत में अच्छी फसल उगाने के लिए अच्छे बीज, सही मिट्टी, उचित मात्रा में जल, खाद एवं देख-रेख की जरूरत पड़ती है, ठीक उसी तरह मछली की अच्छी फसल के लिए भी तालाब की मिट्टी का अच्छा होना जरूरी है। साथ ही साथ अच्छा जीरा, खाद, पूरक आहार एवं देख-रेख की जरूरत पड़ती है। तालाब में मछली के बीज (जीरा) का संचय किया जाता है जिसमें उचित वातावरण एवं भोजन की व्यवस्था कर 8-10 माह तक पाला जाता है तथा फिर बेचा या खाया जाता है। मछली पालन में कृषि और पशुपालन दोनों का ही समायोजन है। तालाब में मछलियों का आहार उत्पादन कृषि की तरह है तथा मछलियों को उचित वातावरण प्रदान करना पशुपालन की तरह है।

मछली पालन की आवश्यकताएँ:

मछली पालन के लिए तालाब का होना अति आवश्यक है, इसके अलावा अन्य आवश्यकताएँ है- मत्स्य बीज (जीरा), पानी, थोड़ी सी पूँजी, मेहनत, जानकारी और बाजार की सुविधा।

मछली पालन की आवश्यकताएँ:

मछली पालन के लिए तालाब निर्माण के लिए स्थल का चुनाव एवं तालाब बनाने के तौर-तरीकों पर ध्यान पर ध्यान देने की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

तालाब बनवाने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें :

- तालाब घर के आसपास हो तो अच्छा है।
- तालाब के लिए उबड़-खाबड़ या पथरीली जमीन न चुनें।
- तालाब के लिए समतल जमीन चुनें। ऊँची जमीन पर तालाब का पानी जल्दी सूखेगा।
- बहुत नीची जगह भी न चुनें इसमें बरसात का पानी भर जाएगा और मछलियाँ तालाब से बाहर निकल भी सकती है।
- तालाब यदि घर के नजदीक हो तो उसकी देखभाल अच्छी तरह हो सकती है।
- खुली जगह का चयन करें। तालाब के चारों ओर घने एवं बड़े पेड़ न हो ताकि तालाब को भरपूर धूप मिले।
- आसपास यदि पानी का साधन हो तो अच्छा है जिससे जरूरत पड़ने पर तालाब में पानी भरा जा सके। यदि ऐसा नही है तथा तालाब वर्षा पर निर्भर है तो पानी बहकर आने का क्षेत्रफल तालाब के क्षेत्रफल का 10 गुना होना चाहिए।
- चिकनी मिट्टी वाली जमीन को तालाब निर्माण के लिए उपयुक्त माना जाता है।
- तालाब निर्माण के दौरान पानी के निकास एवं प्रवेश मार्ग की व्यवस्था का ध्यान रखना चाहिए।
- तालाब बनाने में लगभग 25-35 प्रतिशत जमीन तालाब के बाँध में खर्च हो जाता है अर्थात् यदि आप 0.5 एकड़ का तालाब बनवाना चाहते हैं तो लगभग 0.75 एकड़ जमीन होनी चाहिए।

तालाब की लम्बाई, चौड़ाई कितनी हो?

- तालाब की लम्बाई उसकी चौड़ाई से ढाई से तीन गुणी होनी चाहिए अर्थात् तालाब के लम्बाई एवं चौड़ाई का अनुपात 3:1 उत्तम है।

तालाब की गहराई कितनी रखें?

- तालाब का वातावरण, तालाब की गहराई पर निर्भर करता है। गहराई इतनी होनी चाहिए कि सूर्य की रोशनी तल तक पहुँच सकें। अधिक गहरा तालाब, ऑक्सीजन के अभाव में विषैली गैस उत्पन्न करता है। जहाँ आस पास से पानी आने की व्यवस्था हो वहाँ तालाब की गहराई 3-4 फीट रखनी चाहिए परन्तु जहाँ बरसात के पानी पर निर्भर रहना पड़ता है वहाँ तालाब की गहराई 10-11 फीट किया जा सकता है।

तालाब का बाँध कैसा हो?

- बाँध की ऊँचाई मूल भूमि से एक मीटर रखें। तालाब के बाँध की ऊँचाई तालाब के पानी से जितनी कम होगी, पानी का हवा से सम्पर्क उतना ही अच्छा होगा और हवा से पानी में ऑक्सीजन का मिश्रण अच्छा होगा जिससे पानी में ऑक्सीजन की उपलब्धता अच्छी रहेगी। बाँध की ऊपरी सतह की चौड़ाई कम से कम 2 मीटर हो, बाँध का ढलान तालाब की तरफ कम हो ताकि चढ़ने उतरने में सुविधा हो और मिट्टी कट कर तालाब में भी न जाये, बाँध का ढलान तालाब के बाहर की तरफ ज्यादा रख सकते हैं।

तालाब में पानी आने की व्यवस्था कैसी हो?

✦ पानी के प्रवेश पाइप में छिद्रयुक्त ढक्कन लगायें ताकि पानी में ऑक्सीजन की मात्रा भी बढ़े।

तालाब में आस-पास से पानी आने के लिए एक प्रवेश नाली (मिट्टी, बाँस या सीमेंट) की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रवेश द्वार तालाब के छिछले भाग में बनाना चाहिए।

✦ नाली की गोलाई का व्यास 15 से.मी. से 30 से.मी. हो।

✦ नाली के मुँह पर जाली लगी होनी चाहिए ताकि पानी के साथ कूड़ा-कचड़ा प्रवेश न कर सके एवं तालाब से मछली बाहर न जा सके और न ही बाहर की मछली तालाब में आ सके।

✦ नाली को एक निश्चित ऊँचाई पर लगाना चाहिए।

✦ यदि तालाब वर्षा के पानी पर ही निर्भर हो और बह कर आने वाला पानी अपने साथ बहुत मिट्टी लाता हो तो तालाब में पानी के प्रवेश द्वार के पास एक छोटा गड्ढा बना दें ताकि पानी कुछ देर तक उसमें रुक सके एवं उसमें घुलित मिट्टी गड्ढे में बैठ जाए जिससे तालाब में अनावश्यक मिट्टी नही जमा होगी। छोटे गड्ढे में जमीन मिट्टी की बीच-बीच में सफाई भी कराते रहना चाहिए।

तालाब से पानी निकालने की व्यवस्था कैसी हो?

✦ जरूरत पड़ने पर तालाब से पानी को बाहर निकालने के लिए भी तालाब के तल में नाली लगा होना चाहिए। इस नाली में जाली के अलावा इसे पूर्ण रूप से बंद करने की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि जरूरत के अनुसार प्रयोग किया जा सके एवं पानी की अनावश्यक निकासी को रोका जा सके।

तालाब का अधिप्रवाह कैसा हो?

✦ तालाब का अधिप्रवाह तालाब की लम्बाई की दिशा में हो जिससे तालाब में आने वाला अधिक पानी निकल सके और उसके बाँध को नुकसान न हो।

पुराने तालाब का जीर्णोद्धार :

✦ यदि आपके पास पुराना तालाब है तो उसे भी ठीक कराकर मछली पालन योग्य बना सकते हैं।

✦ तालाब की साफ-सफाई करवाएँ, बड़े पत्थर, अनावश्यक पौधा, पेड़-पौधों की जड़ इत्यादि की सफाई कर दें।

✦ अगर आवश्यक हो तो तालाब को गहरा भी करवायें।

✦ प्रवेश नाली एवं निकास नाली की व्यवस्था ठीक (दुरुस्त) करायें।

आध एकड़ (0.2 हे.) एवं निकास नली की व्यवस्था का निर्माण कैसे करें?

✦ व्यावसायिक मछली पालन के लिए बड़ा तालाब की अच्छा होता है। आधा एकड़ (0.2 हे.) से छोटा तालाब नही बनवाना चाहिए।

✦ आधा एकड़ का तालाब बनाने के लिए 76 डीसमील जमीन की जरूरत पड़ेगी। 26 डीसमील जमीन बाँध बनाने में चला जाएगा।

✦ जमीन को नाप कर निशान लगा लें।

✦ ऊपरी परत की 8 इंच मिट्टी को अलग कर रख दें।

✦ फिर तालाब खुदाई करें एवं खुदाई से निकाली गई ऊपरी सतह की मिट्टी को अलग रखें एवं बाकी मिट्टी से बाँध बनवाते रहें।

✦ बाँध को पहले बताए गए तरीके से बनाएँ, यानि थोड़ा तिरछा और ढलवाँ बनाएँ, ऊपर 2 मी. चौड़ा और नीचे 4.5 मी. चौड़ा।

✦ बाँध को थोड़ा-थोड़ा करके बनाएँ, एक दिन में एक बीत्ता (लगभग 9 इंच) मिट्टी चारों तरफ के बाँध में डालें, फिर पानी छिड़कें एवं पीट-पीट कर मिट्टी को बैठायें। इसी विधि से पूरा बाँध बनाएँ। इस तरह से बाँध मजबूत बनेगा एवं पानी के प्रवाह के दबाव से टूटेगा भी नही।

✦ तालाब की खुदाई पूरी हो जाए तो प्रवेश नाली एवं निकास नाली की व्यवस्था कर दें।

✦ जब तालाब पूरी तरह बन जाए तो उसमें ऊपरी सतह की अलग रखी हुई मिट्टी को समान रूप से फैला दें।

✦ तालाब निर्माण का कार्य मई महीने तक पूरा हो जाना चाहिए ताकि बरसात में पानी भर जाय और मछली पालन हो सके।

तालाब की तैयारी :

तालाब में मछली का बीज संचाय करने के पूर्व तालाब की तैयारी कर लेनी चाहिए ताकि उसमें मछली का प्राकृतिक भोजन उपलब्ध रहे। मछली का प्राकृतिक भोजन प्लैंकटन है जिसकी प्रचुर मात्रा में उपलब्धता होनी चाहिए।

पानी भरने के पूर्व तालाब की तैयारी

✦ तालाब के मिट्टी की जाँच करवा लें।

✦ तालाब के सतह की सफाई करवा लें, पेड़-पौधों की जड़, बड़े पत्थर इत्यादि को हटवा दें।

✦ तालाब की मिट्टी को हल चला कर ढीली कर दें।

✦ फिर चूना डालकर इसे मिट्टी के साथ बराबर मिला लें और पुनः हल चलवा दें। आधा एकड़ के लिए 20 किलो चूना, (40 किलो/एकड़) डालें। चूना की मात्रा मिट्टी के पी.एच. एवं उर्वरा शक्ति पर निर्भर करेगा।

✦ अब उसमें पानी भर दें या बरसात के पानी को भरने के लिए छोड़ दें।

खाद का प्रयोग

✦ तालाब की मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए खाद का प्रयोग करना जरूरी है।

✦ खाद के प्रयोग से मछली के प्राकृतिक भोजन की उपज अच्छी होती है।

✦ नये तालाब की मिट्टी भूरभूरी होती है इसके प्रयोग से मिट्टी की संरचना में सुधार आता है।

✦ इसके प्रयोग से तालाब के पानी का रिसाव भी कम होता है।

विभिन्न प्रकार के खाद का प्रयोग

तालाब में मुख्यतः दो प्रकार की खादों का उपयोग किया जाता है–

1. कार्बनिक खाद - जैविक पदार्थों के सड़ने-गलने से यह खाद प्राप्त होता है उदाहरण - मवेशियों का खाद, सड़े-गले पत्ते-पत्तियों का कम्पोस्ट।
2. अकार्बनिक खाद - इसमें नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश युक्त खाद आते हैं।

खाद का प्रयोग कैसे करें?

तालाब में खाद का प्रयोग, मिट्टी में उपस्थित जैविक कार्बन की उपस्थिति के आधार पर की जाती है। प्रारम्भिक तैयारी (जीरा संचयन के 15

दिनों पूर्व) कार्बनिक खाद तालाब में दी जाने वाली खाद की कुल मात्रा का 20 प्रतिशत भाग होना चाहिए। यदि सदाबहार तालाब में विष के रूप में महुआ की खल्ली इस्तेमाल की गई हो तो खाद की मात्रा आधी कर देनी चाहिए। बाकी बचे 80 प्रतिशत खाद को दस भागों में बाँट कर प्रतिमाह देनी चाहिए जबकि रासायनिक खाद को 10 बराबर भागों में बाँट कर तालाब के चारों ओर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। खाद की बड़ी मात्रा डालने के बदले छोटी-छोटी मात्रा में (15-15 दिनों के अन्तराल पर) प्रयोग करना उचित होता है। रासायनिक खाद का प्रयोग कार्बनिक खाद के प्रयोग के 4-5 दिनों बाद करना चाहिए। तालाब में जैविक खाद के रूप में किसी भी मवेशी के खाद का प्रयोग किया जा सकता है जैसे- मुर्गी, सूकर, गाय, बैल इत्यादि। चूँकि कुछ खादों की उर्वरा शक्ति अधिक होती है इसलिए उनकी कम मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही खाद का प्रयोग सूर्योदय के बाद ही करना चाहिए। साधारणतः तालाब में भैंस के गोबर के प्रयोग की मनाही की जाती है क्योंकि उसमें एक प्रकार का रंग होता है जो पानी के रंग को काला कर देता है जिससे प्रकाश संश्लेषण में बाधा होती है और पानी में ऑक्सीजन के उत्पादन में कमी आ जाती है। साधारणतः गाँवों में मवेशी का गोबर प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होता है इसलिए तालाब में गोबर के उपयोग की सलाह दी जाती है। कुछ किसानों का अनुभव है कि तालाब की तैयारी के समय गोबर के साथ-साथ यदि तालाब में पुआल भी उपयोग किया जाय तो प्लैंक्टन का उत्पादन अच्छा होता है।

गोबर का प्रयोग

जीरा संचय से 15 दिन पहले तालाब में गोबर डाले, आधा एकड़ के तालाब में शुरू में 500 किलो गोबर डालें, (1000 किलो/एकड़) और फिर प्रति माह 400 किलो/एकड़ डालते जाएँ। गोबर को तालाब के किसी एक कोने में डालवा दें जहाँ से यह धीरे-धीरे बह कर पानी में घुलता जाएगा।

डी.ए.पी. का प्रयोग

मिट्टी की जाँच के परिणाम के अनुसार अगर फॉस्फेट की कमी हो तो मछली संचाय के प्रथम माह में डी.ए.पी. 8 किलो/एकड़ डालें। फिर प्रति माह 12 किलो/एकड़ डालते जाएँ। रासायनिक खाद का प्रयोग हमेशा पानी में घोलकर पूरे तालाब में छींट कर करना चाहिए ताकि पानी में अच्छी तरह घुल सके। तालाब में पानी के अन्दर लकड़ी का मचान बनाकर उस पर रासायनिक खाद रख देने से भी यह धीरे-धीरे पानी में घुलता रहेगा और उसका अच्छी उपयोग हो सकेगा।

खाद का प्रयोग कब करें?

- मछली संचय के 15 दिन पूर्व गोबर का प्रयोग करें।
- हर महीने।
- पानी का रंग जब मटमैला हो जाए।
- अगर पर्याप्त प्राकृतिक भोजन की उपज न हो, जो पानी के रंग से भी पता चल जाएगा, (अगर हरा-भूरा है तो ठीक है) तो खाद का प्रयोग करें।

खाद का प्रयोग

- अगर पानी का रंग अत्यधिक हरा हो गया हो या सतह पर काई का जमाव हो जाए तो खाद का प्रयोग बंद कर दें।
- पानी से बदबू आने पर।
- मछलियों में बीमारी के लक्षण दिखने पर।
- ठंढ के मौसम में जब पानी का तापमान बहुत कम हो।
- पानी में ऑक्सीजन की कमी होने पर।

चूना का प्रयोग क्यों?

- चूना पानी की क्षारीयता को बढ़ाता है और मिट्टी में कैल्शियम की उपलब्धता बढ़ाता है।
- पानी को साफ करता है।
- ऑक्सीजन की कमी के कारण दूसरे विषैले गैसों को नियंत्रित करता है।
- गोबर को सड़ाने में मदद करता है।
- मछलियों को बीमारी से बचाता है।
- पानी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है और प्राकृतिक भोजन के निर्माण में मदद करता है।

चूना की मात्रा एवं प्रयोग विधि

- आधा एकड़ के तालाब के लिए संचय के पहले 20 किलो चूना (40 किलो/एकड़) एवं संचय के बाद प्रति माह 5 किलो चूना (10 किलो/एकड़) डालें।
- तालाब में मोटा कीचड़ जमा होने से अधिक मात्रा में चूने का प्रयोग करना चाहिए, जब तल बलुई/पतला कीचड़युक्त हो तो कम मात्रा में चूना की आवश्यकता होगी।

प्रयोग विधि- संचय से पूर्व सूखे तालाब की मिट्टी में मिलाकर अथवा अगर पानी है तो समान रूप से पूरे तालाब में डलवा दें। यदि तालाब में काफी कीचड़ जमा हो तो उसमें कली चूना डाल कर अच्छी तरह मिला दें। चूना मिलाने के लिए यदि तालाब में चूना छिड़काव के बाद गाय-बैल को जाने दिया जाय तो उसके पैर से रौंदने के कारण चूना अच्छी तरह मिट्टी में मिल जायेगा।

तालाब में मत्स्य बीज का संचय

कौन मछली पाले और क्यों?

- जो मछली खाने में स्वादिष्ट हो।
- जिसका जीरा (मत्स्य बीज) आसानी से उपलब्ध हो।
- जिसकी माँग बाजार में हो।
- जिसकी बढ़त तालाब में अच्छी हो।
- तालाब के लिए उपयुक्त मछली है- रोहु, कतला, मृगल, कॉमन कार्प (पहाड़ी)। बाजार में इनकी माँग भी अच्छी है एवं खाने में भी ये स्वादिष्ट होते हैं।
- इसके साथ-साथ सिल्वर कार्प भी पाल सकते हैं। तालाब में प्राकृतिक रूप से घास उपलब्ध है तो ग्रास कार्प भी पालें।

मछलियों के बीज की मात्रा

- मछलियों के बीज की मात्रा उसकी लम्बाई पर निर्भर करता है।
- अगर 1 इंच जीरा डाल रहे हैं तो आधा एकड़ के लिए 5000 जीरा डालें (10,000 प्रति एकड़ की दर से)।

✦ अगर 2.5 इंच का जीरा डाल रहे है तो आधा एकड़ में 2000 जीरा डालें (4000 प्रति एकड़ की दर से)।

✦ किसानों का यह मानना है और उपयुक्त भी लगता है कि तालाब में यदि अधिक मात्रा में जीरा डाल दिया जाय और कुछ महीनों में ही यदि इसे निकाल कर बेचना शुरू कर दिया जाय तो मत्स्य पालक को जल्दी आमदनी मिलनी शुरू हो जाती है। यह पद्धति काफी प्रचलित हो रही है लेकिन इसका ध्यान रखें कि मछलियाँ बहुत छोटी नहीं रह जायें।

मछलियों की जाति का संचयन अनुपात

चूँकि तालाब में मछलियों के स्थान एवं भोजन निश्चित है इसलिए पाली जाने वाली मछलियों का अनुपात भी निश्चित होना चाहिए। तालाब में सभी छः प्रकार की मछलियों का पालन करना चाहिये ताकि तालाब के सभी जगहों का समुचित उपयोग हो सके। साथ ही साथ सभी प्रकार के भोज्य पदार्थ का उपयोग हो सके। साथ ही साथ सभी प्रकार के भोज्य पदार्थ का उपयोग हो सके। तालाब में कम से कम तीन प्रकार की मछलियों का संचय अवश्य करना चाहिए। देखा गया है कि सिल्वर कार्प का अनुपात अधिक होने पर कतला की बढ़ता पर प्रभाव पड़ता है इसलिए इसकी मात्रा कतला से कम रखनी चाहिए। यदि तालाब में ग्रास कार्प के लिए उपयुक्त घास नहीं हो तो ग्रास कार्प का संचय कम करना चाहिए। सुविधानुसार यदि 3, 4, 5 या 6 प्रकार की मछलियों का संचयन करना हो तो निम्न तालिका का प्रयोग कर सकते हैं-

✦ कतला : रोहु : मृगल - 40:30:30

✦ कतला : रोहु : मृगल : कॉमन कार्प- 30:30:15:25

✦ कतला : रोहु : मृगल : कॉमन कार्प : ग्रास कार्प- 30:15:25:20:10

✦ कतला : सिल्वर कार्प : रोहु : मृगल : कॉमन कार्प : ग्रास कार्प- 10:25:15:20:20:10

बीज संचयन में सावधानियाँ

जीरा ऑक्सीजन पैक वाली पॉलीथीन में लायें, इससे परिवहन के दौरान हुई मृत्यु दर कम होती है।

✦ संचयन प्रातः काल या सूर्यास्त के समय करना चाहिए, जब पानी ठंढा हो।

✦ प्लास्टिक के थैली में भरे जीरे को सीधे पानी में न डालें, इसे थोड़ी देर तालाब के पानी में रखें ताकि थैली तथा तालाब के पानी का तापमान समान हो जाए।

✦ जीरों को स्वतः थैली से तालाब में जाने दें।

✦ एक गमछा को पानी में डुबाते हुए पकड़ें एवं इसके ऊपर से मछलियों को छोड़ें। यदि पोटाशियम परमैंगनेट के घोल में जीरा को उपचारित कर दिया जाय तो इनकी जीविता दर भी अच्छी होती है।

मछलियों का प्राकृतिक आहार

मछलियों का प्राकृतिक आहार प्लैंक्टन (छोटे-छोटे जलीय जीव) जिन्हें खुली आँखों से नहीं देख सकते हैं। तालाब के पानी के रंग को देखकर पता लगाया जा सकता है कि मछलियों का प्राकृतिक आहार पर्याप्त है या नहीं। अगर पानी का रंग भूरा है तो प्राकृतिक आहार ठीक मात्रा में है इन्हें देखने के लिए पानी को किसी शीशे के बरतन में (ग्लास या बोतल) भरकर गौर से देखें, बहुत सारे एक ही जैसे छोटे-छोटे जीव आयेगें। ये प्लैंक्टन दो तरह के होते हैं। यदि जंतु समूह के होंगे तो इन्हें जू-प्लैंक्टन और यदि पौधा समूह के होंगे तो इन्हें वनस्पति प्लैंक्टन कहते हैं। मछलियों के प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता की जाँच के लिए (प्लैंकटन नेट) के माध्यम से 50/100 ली. पानी तालाब के विभिन्न भागों से लेकर छानें। पानी तो जाली से बाहर निकल जाएगा लेकिन प्लैंकटन शीशे की नली में जमा हो जाएगा। इस शीशे की नली में नमक के 2-4 दाने डाल दें। सारे प्लैंकटन मर कर नीचे बैठने लगेंगे। यदि बैठने के बाद इनकी मात्रा लगभग एक मि.ली. है तो तालाब में समुचित प्लैंकटन है अन्यथा उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

मछलियों के लिए पूरक आहार :

✦ प्राकृतिक आहार के साथ-साथ मछलियों के उचित बढ़वार के लिए पूरक आहार भी देना चाहिए। अगर तालाब में प्राकृतिक आहार की मात्रा संतोषजनक न हो तो खाद डालें और पूरक आहार की मात्रा बढ़ा दें। साधारणतः पूरक आहार निम्न तालिका के अनुसार देनी चाहिए-

माह	किलो/एकड़	माह	किलो/एकड़
1 माह	2	2 माह	3
3 माह	4	4 माह	5
5 माह	6	6 माह	7
7 माह	8	8 माह	9
9 माह	10	10 माह	11
11 माह	12	12 माह	13

✦ चावल का कोढ़ा एवं सरसों की खल्ली 1:1 के अनुपात में यानि आधा-आधा मिलाकर, दिए गए तालिका के अनुसार दें। (सरसों की खल्ली की जगह भूँगफली की खल्ली भी दे सकते हैं) खाना सुबह-शाम एक निश्चित समय एवं जगह पर ही डालें। इसके साथ ही मिनरल मिक्सचर भी भोजन में एक प्रतिशत की दर से देना चाहिए।

✦ बोरा में खाना डालकर, उसमें छेद कर दें और उसे और उसे तालाब में लटका दें। इसके लिए प्लास्टिक के बोरे का इस्तेमाल करें। जैसे ही खाना खत्म होगा बोरा हल्के हो जाने के कारण अपने आप ऊपर आ जाएगा। एक एकड़ के तालाब में इस तरह तीन चार जगह खाना देने की व्यवस्था करनी चाहिए।

✦ केला के तना के साथ ही बोरा बाँध सकते हैं ताकि तना बहता रहेगा और भोजन पूरे तालाब में फैलेगा।

✦ खाना को सुबह-शाम निश्चित समय, स्थान एवं मात्रा में दें।

✦ गेहूँ का चोकर, जौ का चूर्ण, अन्य अनाज की खल्ली, मकई का चूर्ण, सोयाबीन का चूरा आदि पूरक आहार में इस्तेमाल कर सकते हैं।

✦ माँस का चूरा, हड्डी का चूर्ण, घोंघा, सितुआ एवं पानी के अन्य कीड़ों का चूर्ण आदि भी खाने में मिला कर दिया जा सकता है।

प्रकाशक :

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा)

जहानाबाद